गतसंगस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः।
यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते।।२३।।

गतसंगस्य =प्राकृतिक गुणों में अनासक्त; **मुक्तस्य** =मुक्त के; **ज्ञानावस्थित** =ज्ञान में स्थित; **चेतसः** =मति से; **यज्ञाय** =यज्ञ (श्रीकृष्ण) के प्रीत्यर्थ; **आचरतः** = सम्पादित; **कर्म** =कार्य; **समग्रम्** =सम्पूर्ण; **प्रविलीयते** =पूर्णरूप से विलीन हो जाता है।

अनुवाद

जो पुरुष प्रकृति के गुणों में आसक्त नहीं है और पूर्णज्ञान में स्थित है, उसके सम्पूर्ण कर्म अप्राकृत तत्त्व में विलीन हो जाते हैं।।२३।।

तात्पर्य

पूर्ण कृष्णभावनाभावित पुरुष सम्पूर्ण द्वन्द्वों से छूट जाता है और इस प्रकार प्रकृति के गुणों से भी असंग हो जाता है। वह मुक्त हो जाता है, क्योंकि यह भलीभाँति जानता है कि वह स्वरूप से श्रीकृष्ण का नित्य दास है। अतएव उसके चित्त को कृष्णभावना से विचलित नहीं किया जा सकता। वह जो कुछ भी करता है, आदिविष्णु श्रीकृष्ण की प्रीति के लिए ही करता है। इस प्रकार उसके सम्पूर्ण कर्म यज्ञमय बन जाते हैं, क्योंकि यज्ञ का तात्पर्य पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण को प्रसन्न करना ही है। इस कोटि के यज्ञमय कर्मों का फल निस्सन्देह अप्राकृत तत्त्व में विलीन हो जाता है, इसलिए इनका कोई लौकिक फल नहीं भोगना पड़ता।

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्म कर्म समाधिना।।२४।।

ब्रह्म =परा प्रकृति; **अर्पणम्** =अर्पण; **ब्रह्म** =परतत्त्व; **हविः** =घृत; **ब्रह्म** =अप्राकृत; **अग्नौ** =परमगति रूपी अग्नि में; **ब्रह्मणा** =जीवात्मा द्वारा; **हुतम्** =अर्पित; **ब्रह्म** =भगवद्धाम; **एव** =अवश्यमेव; **तेन** =उसके द्वारा; **गन्तव्यम्** =प्राप्य है; **ब्रह्म** =चिन्मय; **कर्म** =कार्य में; **समाधिना** =पूर्ण तन्मयता के कारण।

अनुवाद

जो कृष्णभावना में पूर्ण मग्न है, उस पुरुष के लिए भगवद्धाम की प्राप्ति निश्चित है; वह उन ब्रह्मरूप क्रियाओं के परायण रहता है, जिनमें ब्रह्म ही अग्निरूपी गति है और अर्पित हवि भी ब्रह्ममय है।।२४।।

तात्पर्य

कृष्णभावनाभावित क्रियाओं के द्वारा अन्त में किस प्रकार भगवद्धाम की प्राप्ति हो जाती है, यह इस श्लोक में कहा गया है। कृष्णभावनाभावित क्रियायें नाना प्रकार की हैं, जिनका अनुवर्ती श्लोकों में उल्लेख किया जायगा। उससे पूर्व, इस श्लोक में कृष्णभावनामृत के सिद्धान्त का निरूपण है। प्राकृत विकारों से युक्त बद्धजीव भव-परिवेश में कर्म किये बिना नहीं रह सकता, यह निश्चित है। अतएव [illegible]